# Model Questions

## Sem - 1 IRC - 1 (History)

**Full Marks : 75**

**Pass Marks - 30**

**Time : 3 Hours**

Answer the questions as per instruction given.

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give answer in their own words as far as practicable.

किन्हीं पांच प्रश्नों का उत्तर दें जिनमें प्रश्न संख्या एक अनिवार्य है।

1.[A] अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें: 1×5=5

(a) हड़प्पा की खोज किसने की?

(b) आर्यों का प्रिय पेय पदार्थ क्या था?

(c) इल्तुतमिश किसका दास था?

(d) मुंडा विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

(e) करो या मरो का नारा किसने दिया?

[B] लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें: 2×5=10

(a) उत्तर वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति का वर्णन करें।

(b) चार आर्य सत्य से आप क्या समझते हैं?

(c) कोल विद्रोह पर संक्षिप्त लेख लिखें।

(d) 1857 की क्रांति के प्रकृति को लिखें।

(e) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना क्यों की गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न: 15×4=60

2. ऋगवैदिक कालीन आर्थिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन करें।

3. महावीर स्वामी की जीवनी और उनके दर्शनों की व्याख्या करें।

4. दिल्ली सल्तनत के पतन के कारणों का वर्णन करें।

5. विजयनगर साम्राज्य पर संक्षिप्त लेख लिखें।

6. 1857 की क्रांति के परिणामों का वर्णन करें।

7. असहयोग आंदोलन के कारणों की व्याख्या करें।

8. 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम का वर्णन करें।

9. कैबिनेट मिशन योजना का विवरण प्रस्तुत करें।

10. भारत विभाजन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

**Model Answers**

**Sem - 1** **IRC - 1 (History)**

**Full Marks : 75**

**Pass Marks - 30**

**Time : 3 Hours**

Answer the questions as per instruction given.

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give answer in their own words as far as practicable.

किन्हीं पांच प्रश्नों का उत्तर दें जिनमें प्रश्न संख्या एक अनिवार्य है।

1.[A] अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें: 1×5=5

(a) हड़प्पा की खोज किसने की?

Ans - दयाराम साहनी

(b) आर्यों का मुख्य पेय पदार्थ क्या था?

Ans - सोम रस

(c) इल्तुतमिश किसका दास था?

Ans - कुतुबुद्दीन ऐबक

(d) उल्गुलान का नेतृत्व किसने किया?

Ans - बिरसा मुंडा

(e) करो या मरो का नारा किसने दिया?

Ans - महात्मा गाँधी

[B] लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें:              2×5=10

**(a) उत्तर वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति का वर्णन करें।**

Ans - यह युग सामाजिक जीवन के उतरोत्तर विकास का युग था। सामाजिक जीवन स्थिरता प्राप्त करने लगा था। पितृसतात्मक परिवार का कर्ताधर्ता, पालक तथा स्वामी, पिता था। परिवार का प्रमुख होने के कारण सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे तथा उसमें निष्ठा रखते थे। समाज में चार वर्णो का स्पष्ट अस्तित्व, ब्राह्मणों की शक्ति में वृद्धि मिलती है, शूद्रों पर निर्योग्यताओं का थोपा जाना प्रारंभ हुआ। उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के बीच श्रेष्ठता के लिए संघर्ष की झलक भी हमें दिखलाई  देती है। गोत्र व्यवस्था स्थापित हो जाती है, चार आश्रमों की जानकारी मिलती है। उत्तर वैदिक काल 1000 वर्ष ई० पू० से लेकर 7वीं शताब्दी ई० पू० तक के बीच का काल माना जाता है |

**(b) चार आर्य सत्य से आप क्या समझते हैं?**

Ans - गौतम बुद्ध ने बैद्ध धर्म में चार आर्य सत्य का वर्णन किए है जिनमें (1) दुःख, (2) दुःख समुदाय (3) दुःख निरोध (4) दुःख निरोध मार्ग | भगवान बुद्ध ने यह बताया है कि संसार दुखमय है  दुःखों का कारण भी है, दुखों का अंत संभव है तथा दुखों का अंत एक मार्ग है | गौतम बुद्ध ने अपने सिद्धांत में बताया है कि प्राणी जन्म भर विभिन्न दुःखों की श्रृंखला में पड़ा रहता है और इसे ही आर्य सत्य का प्रथम सिद्धांत दुख कहा गया का है। संसार के विषयों के प्रति जो तृष्णा है वही दुःख समुदाय आर्यसत्य है। जो प्राणी तृष्णा के साथ मरता है वह उसकी प्रेरणा से फिर जन्म ग्रहण करता है इसलिए तृष्णा को दुःख समुदाय आर्य सत्य कहते है। तृष्णा का त्याग ही दुःख निरोध आर्यसत्य है। तृष्णा के न रहने से न तो संसार की वस्तुओं के कारण कोई दुःख होता है और न मरणोपरांत उसका पुनर्जन्म होता है, और निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है। इस निर्वाण की प्राप्ति  के मार्ग को आर्य अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है, जिस पर चल कर प्राणि निर्वाण / मोक्ष की प्राप्ति करता है |

**(c) कोल विद्रोह पर संक्षिप्त लेख लिखें।**

Ans - कोल विद्रोह ब्रिटिश नीतियों की प्रतिक्रिया के रूप में 1831-32 के दौरान छोटानागपुर के आदिवासी कोल लोगों का विद्रोह था। इस विद्रोह के प्रमुख नेता बुद्धू भगत थे। यह मुंडा जनजाति का विद्रोह था जिसमें 'हो' जनजाति ने भी खुलकर साथ दिया था। इस विद्रोह में छोटानागपुर विशेषकर सिंहभूम, पलामू मानभूम के कुछ भागों की जनजातियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया | ब्रिटिश सरकार के द्वारा लगान की ऊंची दर तथा लगान नहीं चुका पाने की स्थिति में भूमि से मालिकाना हक की समाप्ति, अंग्रेजों द्वारा अफीम की खेती हेतु आदिवासियों को प्रताड़ित किया जाना तथा जमींदारों और जागीरदारों द्वारा कोल जनजातियों का अमानवीय शोषण और उत्पीड़न कोल विद्रोह के मुख्य कारण थे।

**(d) 1857 की क्रांति के प्रकृति को लिखें।**

Ans - इतिहासकारों के बीच इस महान विद्रोह के चरित्र के बारे में मतभेद है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उत्तर-पश्चिमी प्रांत में विद्रोह सिपाही के एक समूह द्वारा एक कानून हीन विद्रोह था। कार्ल मार्क्स ने इस विद्रोह को आजादी के लिए राष्ट्रवादी लड़ाई के रूप में वर्णित किया। मार्क्सवादी लेखकों ने इस घटना को शोषण की सामंती व्यवस्था के खिलाफ किसानो के विद्रोह के रूप में देखा। महान क्रांतिकारी सावरकर ने स्वतंत्रता के लिए पहला संघर्ष के रूप में इस विद्रोह का वर्णन किया। एम. एन. रॉय ने कहा कि यह पूंजीवाद के खिलाफ सामंती प्रतिक्रिया थी। डॉ रमेश चन्द्र मजूमदार ने इस विद्रोह को सिपाही विद्रोह के अलावा कुछ नहीं कहा, परंतु चूंकि इस विद्रोह मे हिन्दु-मुस्लिम एकता स्थापित हुई, और सभी अलग-अलग उद्देश्य को लेकर ही अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किए, अत: उद्देश्य अलग होने के बावजूद सभी का लक्ष्य एक ही था – भारत से अंग्रेजी सत्ता की समाप्ति | अत: इसे राष्ट्रीय आंदोलन कहा जा सकता है।

**(e) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना क्यों की गई।**

Ans - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में हुई थी | अपने शुरूआती दिनों में कांग्रेस का दृष्टिकोण कुलीन वर्ग की संस्था का था | 1907 में कांग्रेस के दो टुकड़े हो गए – गरमदल-नरमदल | गरमदल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय एवं विपिन चन्द्र पाल कर रहे थे, तथा नरम दल का नेतृत्व गोखले, नौरोजी और फिरोज शाह मेहता कर रहे थे | कोंग्रेस के गरमदल के सदस्य पूर्ण स्वराज की मांग कर रहे थे, परन्तु नरमदल ब्रिटिश राज में स्वशासन चाहता था | प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने के बाद 1916 की लखनऊ की बैठक में दोनों दल फिर एक हो गए और होमरूल की शुरुआत हुई, जिसके तहत ब्रिटिश राज में भारत के लिए अधिराजकीय पद (अर्थात डोमिनियन स्टेट्स) की मांग की गई | अतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भारत को अंग्रेजों से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से की गई थी |

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:  15×4=60**

**2.  ऋग्वैदिक कालीन आर्थिक  और सामाजिक स्थिति का वर्णन करें।**

Ans -  ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक और आर्थिक स्थिति के विषय में हमारी जानकारी वैदिक साहित्य एवं पुरातात्विक स्रोतों पर आधारित है | मुख्यतः 1500 ई० पू० से 1000 ई० पू० तक के उनके रहन-सहन, खान-पान, विभिन्न वर्ग, आर्थिक क्रिया कलाप तथा धर्म एवं संस्कार सम्बन्धी स्थिति का अवलोकन किया जाता है | भारत में आर्यों की सफलता के कारण थे घोड़े, रथ और संभवत: काँसे के कुछ बेहतर हथियार भी, जिनके बारे में हमें पुरातात्विक प्रमाण नाममात्र के मिले हैं। संभवत: उन्होंने आरावाला पहिया भी चलाया जो सबसे पहले कौकेसस क्षेत्र में 2300 ई.पू. में प्रयोग में लाया गया। जब वे इस उपमहादेश के पश्चिमी भाग में बसे तब उन्हें राजस्थान की खेत्री खानों से ताँबा मिलता रहा होगा। ऋग्वैदिक लोगों को खेती की बेहतर जानकारी थी। ऋग्वेद के प्राचीनतम भाग में फाल का उल्लेख मिलता है, हालाँकि कुछ विद्वान इसे प्रक्षिप्त पाठ मानते हैं। शायद वह फाल लकड़ी की रही होगी। उन्हें बोवाई, कटाई और द्रावनी का ज्ञान था। विभिन्न ऋतुओं के बारे में भी उन्हें जानकारी थी । जहाँ वैदिक जन बसे थे उन प्रदेशों के आर्य-पूर्व जनों को भी खेती का अच्छा ज्ञान था।

ऋग्वेद में गाय और सांड की इतनी चर्चा है कि ऋग्वैदिक आर्यों को मुख्य रूप से पशुचारक कहा जा सकता है। उनकी अधिकांश लड़ाइयाँ गाय को लेकर हुई है। ऋग्वेद में युद्ध का पर्याय गविष्टि (गाय का अन्वेषण) हैं। गाय सबसे उत्तम धन मानी जाती थी। जहाँ कहीं पुरोहितों को दी जाने वाली दक्षिणा की बात आई है उसमें आम तौर से गायें और दार्सियाँ होती और भूमि कभी न होती । ऋग्वैदिक लोग गाय चराने, खेती करने और बसने के लिए जमीन पर कब्जा करते होंगे, परंतु भूमि निजी संपत्ति नहीं होती थी ।

ऋग्वेद में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते हैं। इससे पता चलता है कि आर्य लोगों में इन सभी शिल्पों का प्रचलन था। ताँबे या काँसे के अर्थ में

'अयस्' शब्द के प्रयोग से प्रकट होता है कि उन्हें धातुकर्म की जानकारी थी। परंतु नियमित व्यापार के होने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है। आर्यजन या वैदिक जन का अधिक संबंध स्थल मार्ग से था क्योंकि ऋग्वेद में उल्लिखित समुद्र शब्द मुख्यतः जलराशि का वाचक है। जो भी हो आर्य लोग शहरों में नहीं रहते थे, संभवतः वे किसी-न-किसी तरह का गढ़ बनाकर मिट्टी के घरवाले गांवों में रहते थे, और पुरातत्ववेत्ताओं को अभी तक ऐसी गढ़ वाली बस्तियों का पता नहीं लगा है। वे पहाड़ों में स्थित गुफाओं से भी परिचित थे।

हाल में हरियाणा में भगवानपुरा नामक स्थल की और पंजाब में तीन स्थलों की खुदाई हुई है, और इन सभी जगह उत्तरकालीन हड़प्पा मृद्भांडों के साथ चित्रित धूसर मृद्भांड (पी.जी.डब्ल्यू.) पाए गए हैं । भगवानपुरा में प्राप्त वस्तुओं की तिथि 1600 ई.पू. से 1000 ई. पू. तक रखी गई है और यही मोटे तौर पर ऋग्वेद का काल भी है। इन चार स्थलों का भौगोलिक क्षेत्र भी वहीं है जो ऋग्वेद के पर्याप्त अंश में मिलता है, यद्यपि इन सभी स्थलों में चित्रित धूसर मृदभांड (पी.जी. डब्ल्यू.) मिले हैं, फिर भी लोहे की वस्तु और अनाज का पता नहीं है। इसलिए हम ऋग्वैदिक अवस्था के समान काल में चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति (पी.जी.डब्ल्यू.) के अंतर्गत लौह-पूर्व अवस्था की कल्पना कर सकते हैं।

ऋग्वेद में हमें 1500-1000 ई.पू. आस-पास पश्चिमोत्तर भारत के लोगों के शारीरिक रूप-रंग की चेतना का कुछ आभास मिलता है। वर्ण शब्द का प्रयोग रंग के अर्थ में होता था, और प्रतीत होता है कि आर्य भाषाभाषी गौर वर्ण के थे और मूलवासी लोग काले रंग के हो सकता है, सामाजिक वर्ग-विन्यास में रंग को परिचायक चिन्ह बनाया गया हो, लेकिन रंगभेददर्शी पश्चिमी लेखकों ने रंग की धारणा को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया है। वास्तव में समाज में वर्गों के सृजन का सबसे बड़ा कारण हुआ प्राचीन वासियों पर आर्यों का आधिपत्य । आर्यों द्वारा जीते गए दास और दस्यु जनों के लोग दास (गुलाम) और शूद्र हो गए। ऋग्वेद में आर्य वर्ण और दास वर्ण का उल्लेख है। जीती गई वस्तुओं में कबीले के सरदारों और पुरोहितों को अधिक हिस्सा मिलता था और स्वभावतः वे अपने गोतियों और भाई-बन्धुओं को वंचित करते हुए अधिकाधिक संपन्न होते

गए इससे कबीले में सामाजिक असमानता का सृजन हुआ । धीरे-धीरे कबायली समाज तीन वर्गों में बंट गया योद्धा, पुरोहित और सामान्य लोग (प्रजा) । इसी तरह का विभाजन ईरान में भी हुआ था । चौथा  वर्ग, जो शूद्र कहलाता था, ऋग्वेद काल के अंत में दिखाई पड़ता है, क्योंकि इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के दशम मंडल में है, जो सबसे बाद में जोड़ा गया है।

पुरोहितों को दक्षिणा में दास दिए जाने की बात बार-बार आई है। मुख्य रूप से दासियाँ दी जाती थीं जिनसे घरेलू काम कराया जाता था । यह साफ जाहिर होता है कि ऋग्वेद-काल में दास प्रत्यक्षत: खेती के काम में या अन्य उत्पादनात्मक  कार्य में नहीं लगाए जाते थे।

ऋग्वेद के युग में ही व्यवसाय के आधार पर समाज में विभेदीकरण आरंभ हुआ। किंतु उन दिनों यह विभेदीकरण बहुत कड़ा नहीं हुआ था। ऋग्वेद में किसी परिवार का एक सदस्य कहता है- "मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं और मेरी माता चक्की चलाने वाली है, भिन्न-भिन्न व्यवसायों से जीविकोपार्जन करते हुए हम एक साथ रहते हैं...।" गायें, रथ, घोड़े, दास-दासियाँ आदि दान में दिए जाते थे। युद्ध में हाथ लगी संपत्ति का असमान वितरण होने के कारण समाज में असमानता आई और इससे सामान्य कबायली लोगों को वंचित करते हुए राजाओं और पुरोहितों को आगे बढ़ने में सहायता मिली। लेकिन चूँकि मुख्य आर्थिक आधार पशुचारण था इसलिए प्रजा से नियमपूर्वक कर (राजस्व) वसूलने की गुंजाइश बहुत कम थी। हमें दान में भूमि मिलने का उल्लेख नहीं मिलता है, और अन्नदान का भी विरल वर्णन ही मिलता है, और हम दास-दासियाँ पाते हैं, लेकिन मज़दूर (अर्थात मज़दूरी पर खटने वाले श्रमिक) नहीं देखते हैं। समाज में कबायली तत्व प्रबल थे, तथा कर-संग्रह और भूमि-संपदा के स्वामित्व पर आश्रित सामाजिक वर्गीकरण नहीं हुआ था। समाज अब भी कबायली और बहुत कुछ समतानिष्ठ था ।

**6. 1857 की क्रांति के परिणामों का वर्णन करें।**

Ans - 1857 ई० की क्रांति के परिणाम बहुत व्यापक थे | इसके पश्चात् अंग्रेजों की नीतियों में स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं |

विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजी दृष्टिकोण में परिवर्तन निम्नलिखित हैं :

देशी शासकों के प्रति दृष्टिकोण के रूप में विद्रोह में देशी शासक या तो तटस्थ रहे या उन्होंने अंग्रेजों को समर्थन दिया। अंग्रेजों द्वारा प्रतिक्रियावादी शक्तियों, प्रगतिशीलता विरोधीशक्ति, राजनीतिक मित्र के रूप में इनकी पहचान स्थापित हुई। अंग्रेजों की ओर से तुष्टिकरण की नीति एवं समझौतावादी दृष्टिकोण, उनके राजनीतिक अस्तित्व को स्वीकार किया जाना, साम्राज्य विस्तार की नीति का परित्याग, डलहौजी के गोद निषेध नीति का परित्याग, सम्मानित किए जाने का दृष्टिकोण, उन्हें मौद्रिक और प्रादेशिक पुरस्कार दिया जाना - 1861 में' स्टार ऑफ इंडिया का सम्मान' पटियाला, बड़ौदा, भोपाल, ग्वालियर आदि राज्यों को दिया गया। बाद के दिनों में उनके अधीनस्थ को स्थापित किया जाना -ब्रिटिश परम सत्ता के प्रति उनकी निष्ठा को स्थापित किया जाना।

मुसलमानों के प्रति दृष्टिकोण के रूप में अंग्रेजों के द्वारा विद्रोह के कारणों का विश्लेषण और मुस्लिम कारक को एक महत्त्वपूर्ण कारक माना जाना । मुस्लिम विरोधी दृष्टिकोण सैन्य व्यवस्था में दृष्टिगोचर होती है जो मुसलमानों की भूमि पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित करने में दृष्टिगोचर होती है। ये मुस्लिम विरोधी रूख 1870 तक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

जमींदारों के प्रति दृष्टिकोण के रूप में जमींदारों के प्रति समझौतावादी दृष्टिकोण- जमींदारों को शक्तिशाली वर्ग के रूप में समझा गया,जो कि उपनिवेशवाद विरोधी शक्ति के लिए अवरोध के समान थे। जमींदारों को भारतीय समाज के परंपरागत नेता के रूप में स्वीकार किया गया। उनके हितों, अधिकारों के सुरक्षा की बात कही गयी। सरकार द्वारा जब्त किए गए भूमि क्षेत्रों को उन्हें वापस किया गया।

बुद्धजीवी वर्ग के प्रति दृष्टिकोण के रूप में विद्रोह के दौरान बुद्धिजीवी वर्ग की तटस्थता और अंग्रेजी सरकार द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग के इस दृष्टिकोण को सराहना| बाद के दिनों में इसी वर्ग के द्वारा औपनिवेशिक शासन के स्वरूप का विश्लेषण, इसी वर्ग के द्वारा राजनीतिक आंदोलन में नेतृत्व और इसी वर्ग के द्वारा राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान और बुद्धिजीवी वर्ग की इस भूमिका की अंग्रेजों के द्वारा आलोचना।

सुधारों के प्रति दृष्टिकोण के रूप में अंग्रेजों का ऐसा मानना था कि उनकी सुधारवादी नीति से भारतीय प्रतिक्रियाएँ हुई, भारतीय प्रतिक्रिया को एक कारक के रूप में समझा गया। सुधार विरोधी रुख प्रतिक्रियावादी शक्तियों का समर्थन, 1857 के बाद अंग्रेज प्रगतिशील विचारों के विरोधी हो गए और सुधारों के प्रति पूर्ण तौर से उदासीनता दिखायी | समाज के रुढ़िवादी तत्वों को समर्थन दिया गया।

नस्लवाद का दृष्टिकोण के रूप में अंग्रेजी शासन में नस्लवादी प्रवृत्ति का 1857 के बाद बहुत अधिक प्रबल हो जाना, खुले तौर पर नस्लवादी नीतियों को समर्थन दिया जाना, प्रबल नस्लवादी प्रवृत्ति रेलवे आरक्षण, प्रतीक्षालयों में आरक्षण, पार्कों इत्यादि स्थानों पर भारतीयों के प्रवेश को निषेध करने में दृष्टिगत होती है। जातीय श्रेष्ठता के सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास किया और प्रजातीय तौर पर इन्होंने स्वयं को श्रेष्ठ घोषित किया। | स्वामी जाति के सिद्धांतों को प्रोत्साहन दिया गया।

## विद्रोह के पश्चात सैनिक और प्रशासनिक नीति

सैन्य नीति के रूप में सामान्य तौर पर सैन्य व्यवस्था में यूरोपीय प्रभुत्व को स्थापित करने का प्रयास, भारतीयों के ऊपर निर्भरता को कम करने का प्रयास, भारतीयों को विभाजित करने का प्रयास किया गया | अधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में विशेष तौर पर जिनका सामरिक महत्त्व अधिक था | यूरोप के लोगों के नियंत्रण में लाया गया। महत्त्वपूर्ण पदों पर यूरोपियों की नियुक्ति की गई। सैन्य व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण शाखाओं जैसे तोपखान, टैंक इत्यादि यूरोपियों के नियंत्रण

में रखा गया | भारतीयों को अधिकारी वर्ग से बाह्र रखने का प्रयास किया, 1914 तक कोई भी भारतीय सूबेदार पद से ऊपर नियुक्त नहीं हुआ, भारतीय सैनिकों को लड़ाकू और गैर लड़ाकू वर्गों में विभाजित किया गया | सिक्ख, गोरखा, पठान को लड़ाकू वर्ग तथा अवध बिहार एवं मध्य भारत के उच्च जाति के लोगों को गैर लड़ाकू वर्ग में रखा गया | सैन्य व्यवस्था के भारतीय अंग को संतुलन और प्रति संतुलन के आधार पर व्यवस्थित किया गया। इसके अंतर्गत भारतीयों का एक वर्ग दूसरे वर्ग को संतुलित करता था। यह भारतीयों के बीच विभाजन का प्रयास था। भारतीय सैन्य व्यवस्था को क्षेत्र, धर्म, जाति आदि के आधार पर व्यवस्थित किया गया और सैन्य व्यवस्था में कबीलाई एवं जातिगत सिद्धांतों को अपनाया गया। कई रेजीमेंट में कम्पनियों को जाति और समुदाय के आधार पर स्थापित किया गया। भारतीय सेना के मिश्रित स्वरूप को स्थापित करने का प्रयास किया गया ताकि साम्राज्यवाद विरोधी खतरे को टाला जा सके और सेना के भारतीय अंग के विभिन्न हिस्से एक-दूसरे को प्रति संतुलित करते रहें | कम्पनी की यूरोपियन सेना का विलय सम्राट की सेना में कर दिया गया।

प्रशासनिक नीति के रूप में 1858 में एक नया अधिनियम लाया गया और इस अधिनियम के द्वारा संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया गया, ईस्ट इंडिया कम्पनी के नियंत्रण को समाप्त किया गया, इस नियंत्रण को ब्रिटिश राजतंत्र को हस्तांतरित किया गया, बोर्ड ऑफ कंट्रोल नियंत्रण की सर्वोच्च निकाय थी, उसको समाप्त कर दिया गया | एक नये पद भारत मंत्री का सृजन किया गया, जो कि सेक्रेटरी ऑफ स्टेट कहलाता था | एक नये परिषद् की स्थापना की गयी। यह 15 सदस्यीय परिषद् थी (भारत परिषद्) इसका कार्य था भारत मंत्री को उसके कार्यों में सहायता प्रदान करना | भारत मंत्री ब्रिटिश संसद का एवं साथ में ब्रिटिश मंत्रीमंडल का एक सदस्य था और अपने कार्यों के लिए संसद के प्रति उत्तरदायी था। वास्तविक शासन व्यवस्था पर नियंत्रण ईस्ट इंडिया कम्पनी से ब्रिटिश संसद को हस्तांतरित किया गया। इस अधिनियम के द्वारा प्रशासनिक व्यवस्था में एक मौलिक परिवर्तन लाया गया और इस परिवर्तन को बाद के अधिनियमों के द्वारा मजबूत आधार दिया गया | 1861 के

अधिनियम के द्वारा वायसराय के कार्यक्षेत्र का विस्तार किया गया और उसे विधायी शक्तियाँ दी गयी |

1857 की क्रांति में लोगों के उद्देश्य अलग-अलग जरूर थे, परन्तु उनका लक्ष्य एक ही था – भारत से अंग्रेजी शासन की समाप्ति | इस दौरान लोगों के दृष्टिकोण अलग-अलग थे, लेकिन भारत में इसका परिणाम आधुनिक राष्ट्रवाद के जन्म एवं लोकतान्त्रिक तत्वों के उद्भव एवं विकास के रूप में दिखलाई पड़ता है |